फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 356 फरवरी 2018

ईन्धन क्या है ?

एक प्रवचन सुना।

अरे! आप कब से प्रवचन सुनने लगे? आप तो कहते हो, यहाँ सब ज्ञानी हैं, कृपया प्रवचन ना ही करें।

हाँ, यह तो मैं मानता हूँ और कहता भी हूँ। लेकिन यह प्रवचन जो मैंने सुना वो एक ऐसे सन्दर्भ में था, और ऐसे प्रश्नों पर था जो कोमल के संग महत्वपूर्ण भी हैं। इसलिये प्रवचन के प्रति अपनी अरुचि को यहाँ नरम किया।

अरे! आपने तो माहौल का स्वाद ही बदल दिया। कुछ विस्तार से तो बोलें।

भीड़ जमी थी। फाटक के पास। सुनने में था कि तीन युवा कट गये। ड्युटी से लौट रहे थे। भीड़ में काफी बेचैनी थी। वो भीड़ हर दिन यह क्रासिंग पार करती है। माहौल में अहसास था कि मानों सब का कुछ अंश कटा है।

फिर ?

एक युवा सब को कुछ सुना रहा था। सब मन लगा कर सुन रहे थे। वो बार-बार कट जाने शब्द पर अटक रहा था। स्वर में एक कम्पन थी और भाषा में बहुत मनन था। जैसे कि उसने अपनी भाषा में और भाषा से काफी कुछ प्रयोग किये हैं।

लग रहा है कि भाषा, माहौल, उस शख्स से आप बहुत प्रभावित हुये हैं। प्रवचन कह कर शायद आप प्रभाव को थोड़ा खोल रहे हैं।

शायद आप ठीक कह रहे हो। लेकिन उसके बोलने की स्टाइल पर प्रवचन का प्रभाव था। उसने कटने शब्द की इतनी तरह से व्याख्या की कि सब व्याकुल हो गये। कनफ्युज्ड हो गये।

अपने आप में कटना शब्द बहुत यूज होता है। अपने बीच हम बहुत इस्तेमाल करते हैं।

वो यह जानता था। शरीर कटता है। चीजें कटती हैं। इन्सान प्रकृति से कटता है। शरीर से हाथ कटते हैं। बचपन दिमाग से कट जाता है। बुद्धि करुणा से कट जाती है। जीवन के साधन जीवन से कट जाते हैं। मनुष्य से मनुष्य कट जाता है। मशीन से मनुष्य कट जाता है।

यह सारा वह रुक-रुक कर कटने पर बोल रहा था क्या? इसमें तो लोगों ने अपने कटने की फोर्स से अचानक परिचय प्राप्त किया होगा।

मैं तो इतनी दूर से यहाँ ही इस कटने की शक्ति को महसूस कर रहा हूँ।

इसीलिये शायद हम आकर्षित होते हैं उस सोच से जो कठिन क्षणों में सोच को सम्भव बनाती है, हठीला बनाती है, सोच की धारा को सब में बहा देती है।

कुछ ऐसा ही था। कटने का दर्द, कटने की उम्मीद, कटने की आशंका, कटने की आकांक्षा, कटने का क्रोध, कटने का आनन्द, सब पक रहा था। और ईन्धन, बोलो क्या था ?

क्या था ?

मेरी कोशिश सुनिये। जमीन कट गई। जमीन से कट गये। ट्रेन ली, गाँव से कट गये।

फिर भी, ईन्धन क्या? विवरण महत्वपूर्ण है। यह सब के पास बहुतायत में है। और हर वर्णन में ईन्धन का एक विवरण है।

यहाँ से तो सालोंसाल जा रहे हैं हजारों जगह। बिदेसिया गीत और जहाजी गीत कण-कण व्यापी हैं।

तो, तू कह रही है कि संगीतमयता वह ईन्धन है ?

यार तुम लोगों ने तो बीच में आ कर मेरी बातों का अपहरण ही कर लिया। लेकिन बातें बहुत अच्छी बोले हैं। ईन्धन शायद एक नहीं है।

और, कुछ ईन्धन जुलूस में चलती है। कुछ ईन्धन जल जाती है। कुछ ईन्धन लावा रूप में अंतर्शिरा बन कर बहती है।

तेरा लावा उल्लास में कभी इधर-उधर तो निकलता है। उसको क्या बोलते हैं ?

नाम ढूँढ रहा हूँ दोस्त। नाम ढूँढ रहा हूँ। एक बार नाम मिल जाये तो सब की हवा टाइट हो जायेगी। वो नाम ही नहीं मिल रहा। अनुभव में है, वर्णन में है, अहसास में है, धारा में है, प्रवाह में है, प्रतिध्वनियों में है, क्रियाओं की लहरों में है।

तेरी यह खोज और तेरा सुरूर मुझे उत्तेजित करता है।

बहुत कमजोर हैं कम्पनियाँ

मालिकों , फैक्ट्री मालिकों का दौर 1860 में लड़खड़ाने लगा था। दस-बारह द्वारा मिल कर फैक्ट्री लगाना, ज्वाइन्ट स्टॉक कम्पनियों का बनना इसका एक लक्षण था। फिर हजारों शेयर होल्डरों से पैसे जुटाना फैक्ट्री स्थापना के लिये आवश्यक हो गया। फैक्ट्री की बढती साइज और बढती लागत के कारण फिर फैक्ट्री लगाने के लिये धन का मुख्य स्रोत कर्ज बना। मालिकों का स्थान चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, प्रेसीडेन्ट, सी ई ओ ने लिया, मैनेजमेन्ट ने लिया। कम्पनियों से तनखा लेते, कम्पनियों से चोरी करते कम्पनियों के इन मुखियाओं को मालिक कहने का चलन रुका नहीं है। नेता, अखबार, रेडियो, टी वी ''कम्पनी मालिक'' का प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। लेकिन एक सौ वर्ष से कमजोर होती आई कम्पनियाँ इधर बहुत कमजोर हो गई हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं बनाये और उनकी सरकारों द्वारा बनाये गये नियम-कानून लागू किये जायें तो कम्पनियाँ बन्द हो जायेंगी। कम्पनियों द्वारा फैक्ट्रियों में, ट्रान्सपोर्ट में, मार्केटिंग में इनकी सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनत वेतन, आठ घण्टे की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे दुगनी दर से, स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर रखना लागू किये जायें तो दुनिया में अधिकतर कम्पनियाँ बन्द हो जायेंगी।

✶**जय स्विच** (407 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में दिसम्बर महीने के ओवर टाइम के पैसे 20 जनवरी को सिंगल रेट से दिये और ई एस आई के नाम पर इनमें से किसी मजदूर के 25, किसी के 40, 50, किसी के 130 रुपये काट लिये। फैक्ट्री में 100 महिला वरकरों के लिये मात्र एक शौचालय है। और, एच आर वाले तथा एक ठेकेदार कम्पनी का सुपरवाइजर मजदूरों के बैंक खातों में तनखा भेजने की जगह कमीशन के फेर में एक बैंक में खाते खुलवाने के लिये दबाव डाल रहे हैं।

✶**ए आर के डिजाइनिंग** (7 हैवल्स चौक, फरीदाबाद) गारमेन्ट फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है पर छूटने का कोई टाइम नहीं, रात के 2 बजे, अगली सुबह 5 बजे। और फिर 9 बजे से ड्युटी आरम्भ। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। रात 11 बजे और बाद तक रोकते हैं तब रोटी के लिये पेट नाप कर पैसे देते हैं — हैल्पर को 25 रुपये और टेलर को 50 रुपये। क्वालिटी मैनेजर गाली देता है।

✶**एस के एच मैटल** (आई एम टी मानेसर में सैक्टर-8 में मारुति सुजुकी परिसर के अन्दर) फैक्ट्री में केवल स्टाफ के लोग परमानेन्ट हैं और छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 800 वरकर हैं। फैक्ट्री में 100 से ज्यादा रोबोट हैं। वैल्ड शॉप में 8-8 घण्टे की शिफ्ट हैं। प्रैस शॉप में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में 120 मजदूर हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं और कहते हैं कि कोई पूछे तो कहना कि दुगुनी दर से देते हैं। अलग-अलग डिपार्ट के हिसाब से प्रोडक्शन बढाते हैं। डिपार्ट मीटिंग में एक समोसा और लड्डू, 235 की जगह 280 पीस दो, पैसे बढाने की कोई बात नहीं। मीटिंग में कोई वरकर पैसे बढाने की बात करता है तो अगले दिन उसे एच आर में बुलाते हैं। वहाँ एकत्र स्टाफ के कई लोग अकेले मजदूर को धमकाते हैं और फिर निकाल देते हैं। दिसम्बर 2017 में 2 को इस प्रकार निकाला। रोबोट से 2014 में एक मजदूर की मृत्यु के बाद वैसा नहीं हुआ है। मारुति सुजुकी फैक्ट्री की ही तरह एस के एच मैटल में भी रोज 15 मिनट एक्सट्रा काम। इन मिनटों को जोड़कर मारुति में बदले में छुट्टी अथवा पैसे देते हैं लेकिन एस के एच में न छुट्टी देते और न ही पैसे।

✶**आहुजा वेब** (डी-80 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में धागा कटिंग का काम करती 20 महिला मजदूरों की तनखा 6000 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। फैक्ट्री में काम करते 250 वरकरों की सुबह साढे नौ से रात 9 बजे की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶**पैरागॉन** (बी-59, हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने ओवर टाइम के दुगुनी दर से भुगतान को सिंगल रेट से पेमेन्ट में बदला है। इस पर मजदूरों ने ओवर टाइम करना ही बन्द कर दिया है। ''6 बजे फैक्ट्री छोड़ देते हैं।''

✶**गंगा ओवरसीज** (647-48 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 250 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और 450 को दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखा है। कैन्टीन नहीं है। कम्पनी एक कप चाय भी वरकरों को नहीं देती है। रोज दो घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।

✶**जे आर एन इंजिनियरिंग वर्क्स** (शेड नं. 103, रोड़ नं. 2, नैपको बेवल गियर काम्पलैक्स, 20/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) फैक्ट्री में बनाये जाते लोहे के ऑटो पार्ट्स जर्मनी भी भेजे जाते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, रविवार को भी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। करीब 300 मजदूर हैं, अधिकतर की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं — इधर जनवरी में 15 की फैक्ट्री में फोटो खिंचवाई है ई एस आई तथा पी एफ के लिये। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के मात्र 8800 रुपये। सी एन सी, वी एम सी चलाते नये ऑपरेटरों को भी 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 8800 रुपये, दो-तीन महीने बाद 500-1000 रुपये बढाते हैं। दो किस्म की चाय — नाइट शिफ्ट में एक रोज एक स्टाफ वाले ने वरकरों को घटिया चाय पर एतराज किया : '' कैसे पीयेंगे इसे ?'' अगले रोज रात को स्टाफ और वरकरों की एक जैसी चाय।

✶**प्योगनम** (268 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में धागा कटिंग में 150-200 वरकर हैं, ई एस आई नहीं , पी एफ नहीं, सब पीस रेट पर। चिल्ला कर रेट 3 रुपये बताते हैं पर काम होने के बाद 2 रुपये के हिसाब से पैसे देते हैं।

✶**सेन्टीनल सेक्युरिटी** कम्पनी करीब 20,000 गार्ड सप्लाई करती है। ओखला, दिल्ली में फैक्ट्रियों पर लगे अधिकतर गार्डों को सेन्टिनल सेक्युरिटी 12 घण्टे रोज और तीसों दिन ड्युटी के 12,500-13,500 रुपये देती है जबकि बिल गार्ड के नाम से 24,000 का होता है। सोनी, टाइटन, रेडिको खेतान में गार्डों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के सेन्टीनल सेक्युरिटी 18,500 रुपये देती है।

✶ **डिम्पल** (बी-12, हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते थे जिसे घटा कर डेढ की दर से किया है....

✶**कास्टमास्टर** (64 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में प्रेशर डाईकास्टिंग द्वारा अल्युमिनियम के ऑटो पार्ट्स करीब 300 मजदूर बनाते हैं। फैटलिंग विभाग में काम करते 20 वरकरों की तनखा मात्र 7500 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, तनखा बैंक में भेजने की बजाय नकद और देरी से।

✶**मैग्नोलिया/मंगोलिया** (बी-60, हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में टेलरों की तनखा 9500 रुपये है जिसे कम कर कम्पनी 9119 रुपये करना चाहती थी पर कर नहीं पाई। मैनेजमेन्ट नये टेलर 9119 रुपये तनखा में रख रही है। फैक्ट्री में पुराने और नये टेलरों के तालमेलों ने उत्पादन की ऐसी-तैसी करनी शुरू कर दी है।

✶**एल्पिया रबड़** (60 सैक्टर-25, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶रेवाड़ी जिले के **बावल** औद्योगिक क्षेत्र में **एग्लो इण्डिया** फैक्ट्री में बफिंग का काम करते एक मजदूर ने व्हाट्सएप से सन्देश भेजा है : काम पीस रेट पर है और रफ्तार बढा कर वरकर दो पैसे बनाने लगते हैं तो पीस रेट कम कर देते हैं।

✶यामाहा और होण्डा दुपहियों के बॉडी कवर आदि **सुपर ऑटो** (13 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। ढाई सौ वरकरों की ई एस आई तथा पी एफ हैं और इनकी तनखा बैंक खातों में भेजते हैं। ढाई सौ मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं और तनखा मात्र 6700 रुपये, नकद।

नाक तक सरकार

मण्डी-मुद्रा, मजदूरी प्रथा, ऊँच-नीच वाले सामाजिक सम्बन्धों के अधिकाधिक लड़खड़ाते जाने का समय है यह। आज मंत्रियों के आदेशों का अधिकारियों द्वारा पालन नहीं करना, अफसरों के आदेशों का कर्मचारियों द्वारा पालन नहीं करना, अदालतों के आदेशों का किसी द्वारा पालन नहीं करना, युवाओं द्वारा रस्मों-रिवाजों का पालन नहीं करना, पार्टी नेताओं के आदेशों का पालन पार्टी सदस्यों द्वारा नहीं करना, कानूनों का पालन किसी द्वारा नहीं करना दुनिया-भर में सामान्य होता जा रहा है। सन् 1800 के बाद भारत में बादशाहों के आदेशों का पालन उनके अपने परिवार में नहीं होता था, दिल्ली में लालकिला तो उन शहंशाहों के लिए बहुत बड़ा था। खानापूर्ती का समय था वह। आज लाखों में पुलिस-फौज वाले सरकारी तन्त्रों के मुखियाओं की स्थिति उन बादशाहों वाली है। रोना-धोना खूब है और चौतरफा खानापूर्ती ही खानापूर्ती है। आज नई समाज रचना के तीव्र मंथन के दौर में तो हम हैं ही, सामान्य मामलों में भी अपने दम पर मिल कर कदम उठाना एक अनिवार्य आवश्यकता है। बढते दायरों में मिल कर कदम उठाना अधिकाधिक प्रकट हो रहा है — 2013 में नोएडा तथा ओखला उद्योगिक क्षेत्र में, 2014 में कम्बोडिया में, 2015 में उद्योग विहार गुड़गाँव में तथा केरल में मुन्नार में चाय बागानों में, 2016 में कर्नाटक में बंगलुरू तथा बांग्लादेश में......

✶ **कैलाश रिबन** (403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तनखा और ओवर टाइम के पैसे देने में 6 महीने से देरी कर रहे हैं। इधर दिसम्बर की तनखा 15-16 जनवरी को दी और ओवर टाइम के पैसे 25 जनवरी तक नहीं दिये तो सब वरकर, 200 मजदूर 10 बजे फैक्ट्री के बाहर निकले। फिर 250 वरकर 27 जनवरी को फैक्ट्री में चले गये और उन्हें उसी दिन ओवर टाइम के पैसे दे दिये। लेकिन वीविंग डिपार्ट के 50 मजदूर अन्दर नहीं गये। प्रोडक्शन मैनेजर की धमकी को इन वरकरों ने अनसुना किया। कम्पनी की दिल्ली में मायापुरी में फैक्ट्री से माल आता है इसलिये अन्दर गये 250 के लिये ढीला-ढाला काम है। मृत चेयरमैन की पत्नी ने 31 जनवरी की वीविंग डिपार्ट के 50 मजदूरों को बातचीत के लिये बुलाया है..... फिल्टर खराब, फैक्ट्री में पीने का पानी 5 महीने से खराब है।

✶ **प्युरोमैटिक फिल्टर्स** (12 डी आई डी सी ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 30 मजदूर सुबह साढे आठ से रात सवा आठ की शिफ्ट में हैं। ओवर टाइम 3 घण्टे का ही और वह भी सिंगल रेट से। नकद देने की बजाय ओवर टाइम के पैसे नवम्बर 2017 से बैंक खातों में भेजने लगे। नकद के लिये मजदूरों ने 10 दिन काम बन्द किया पर कम्पनी नहीं मानी। हैल्पर-कारीगर की तनखा 9600 रुपये। नये ग्रेड के बारे में चेयरमैन कहता है कि कोर्ट का फैसला आने पर एरियर के साथ देंगे।

✶ **पनोरमा एक्सपोर्ट** (बी-188 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में सैम्पलिंग ही, प्रोडक्शन कम्पनी की फरीदाबाद फैक्ट्री में। नये ग्रेड के लिये वरकरों से मैनेजमेन्ट कहती है कि कोर्ट से लिखवा कर लाओ।

✶ **हरियाणा सरकार** ने फैक्ट्री मजदूरों के लिये 1 जुलाई 2017 से देय मंहगाई भत्ते (डी ए) की घोषणा ही नहीं की। **दिल्ली सरकार** ने 1 अक्टूबर 2017 से फैक्ट्री मजदूरों के लिये देय मंहगाई भत्ते (डी ए) की घोषणा फरवरी 2018 के आरम्भ तक नहीं की। **उत्तर प्रदेश सरकार** ने अप्रैल 2017 से फैक्ट्री मजदूरों के वेतन में कोई वृद्धि नहीं की है।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2017 से निर्धारित न्यूनतम वेतन

अकुशल श्रमिक : 8 घण्टे 26 दिन के	13,584 रुपये (8 घण्टे के 522 रुपये)
अर्धकुशल श्रमिक :	14,958 रुपये (8 घण्टे के 575 रुपये)
कुशल श्रमिक :	16,468 रुपये (8 घण्टे के 633 रुपये)

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— मंगलवार, 27 फरवरी को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 26 फरवरी को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— बुधवार, 28 फरवरी को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में फरवरी में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

कुछ फुर्सत में

परमानेन्ट मजदूरों पर नियंत्रण का विचार ही मैनेजमेन्टों ने छोड़ दिया लगता है। उन्हें यह-वह दे कर पुचकारना और उन्हें टेम्परेरी वरकरों से काम करवाने वालों की भूमिका देना कम्पनियों ने आमतौर पर तय कर लिया लगता है। लेकिन तनखा टेम्परेरी से चार-पाँच गुणा होने आदि के कारण परमानेन्ट मजदूर डरते भी हैं। फैक्ट्रियों में सामान्यतः पाँच-दस-पन्द्रह प्रतिशत मजदूर ही परमानेन्ट हैं। उत्पादन कार्य मुख्यतः टेम्परेरी वरकर ही करते हैं और उनकी कम्पनी के प्रति बिलकुल भी वफादारी नहीं होती, डर भी ऊपरी-ऊपरी होता है। इसलिये ''पुराने'' होने पर टेम्परेरी वरकर भी मैनेजमेन्टों के नियन्त्रण के बाहर होते जाते हैं। ''पुराने'' मानी कभी दो-चार-छह महीने वाले तो कभी एक-दो-चार-छह-आठ-दस साल वाले। ''पुराने'' टेम्परेरी को निकालने के लिये मैनेजमेन्टें हर समय कसरत करती रहती हैं। आई एम टी मानेसर में **डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज** फैक्ट्रियों में मार्च 2017 में मैनेजमेन्ट ने काफी पापड़ बेले थे। सैंकड़ों टेम्परेरी वरकर कार्यस्थल छोड़ कर फैक्ट्री गेट के बाहर एकत्र हुये थे, उत्पादन रुका था। मैनेजमेन्ट को पीछे हटना पड़ा था। इधर फिर ...

बढते आदान–प्रदान

✶**पैको इन्डस्ट्रीज** (डी-31, 32, 33 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 200 मजदूर मुख्यतः निर्यात के लिये कारब्युरेटर बनाते हैं। दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च 2017 से निर्धारित न्यूनतम वेतन मैनेजमेन्ट ने लागू नहीं किया। कहते रहे कि कोर्ट का स्टे है, दिखाओ नया ग्रेड कहाँ मिल रहा है। एक पे-स्लिप जिसमें नया ग्रेड दर्शाया था वह दिखाने गये तो साहब ने नहीं देखी। दबाव बढाने के लिये मजदूरों ने ओवर टाइम बन्द किया पर तीन महीने यह करने पर भी कम्पनी ने नया ग्रेड नहीं दिया। पास ही डी-72 स्थित **बुटीक** गारमेन्ट एक्सपोर्ट फैक्ट्री के मजदूरों ने बताया : नया ग्रेड लागू नहीं करने पर एक रोज सब वरकर फैक्ट्री में बैठे गये थे और उत्पादन तब जारी किया जब मैनेजमेनट नया ग्रेड देने पर राजी हुई, 3 मार्च से एरियर भी दिया। फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट के मेन बन्दे को पैको मजदूरों ने 29 जनवरी को लिख कर दिया कि नया ग्रेड लागू नहीं किया तो 5 फरवरी से टूल डाउन करेंगे। तीन फरवरी को डायरेक्टर ने फैक्ट्री आ कर बातचीत के लिये मजदूर बुलाये और बोला, ''अभी स्टे आर्डर है, केस फाइनल होते ही एक-एक पैसा दे देंगे, एरियर के साथ देंगे....''। सब मजदूरों ने सोमवार, 5 फरवरी को टूल डाउन करने का निर्णय लिया।

✶बी-43, 44 हौजरी कॉम्पलैक्स, नोएडा स्थित **वीयरवेल एक्सपोर्ट** फैक्ट्री में 11जनवरी को हँगामा हुआ। दिसम्बर की तनखा नहीं दी थी। मैनेजर घबरा गये। मैनेजिंग डायरेक्टर फैक्ट्री पहुँचा। हँगामे के बीच वरकरों ने साहब को घेर कर सवालों की बौछार की। क्या जवाब देते। यही बोले कि दिसम्बर की तनखा 15 जनवरी को दे देंगे। हँगामा जारी रहा। मजदूरों ने इस का वीडियो बना कर व्हाट्सएप के जरिये फैलाया। शीघ्र ही यह बातें दिल्ली और इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों के संग-संग दुनिया-भर में। उत्पादन और वितरण के वैश्विक चरित्र के कारण वीयरवेल कम्पनी की पोजीशन और टाइट हो गई। दिल्ली में ओखला में कम्पनी की फैक्ट्री के वरकरों ने नया न्यूनतम वेतन लागू करवाने के लिये पहले ही कम्पनी की नाक में दम कर रखा है। नोएडा फैक्ट्री में मजदूरों के सामुहिक कदम से वीयरवेल मैनेजमेन्ट इतनी हड़बड़ाई की 11 जनवरी को ही साँय दिसम्बर की तनखा देनी आरम्भ कर दी। हड़बडाने के संग-संग मैनेजमेन्ट इतनी डर भी गई कि एच आर वालों की छुट्टी कर दी।

✶**सोनुएग्जिम** (बी-5/3 और बी-6/2 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्रियों में सैम्पलिंग तथा फिनिशिंग का काम होता है और प्रोडक्शन का काम कम्पनी की नोएडा तथा ई-47/11 ओखला फेज-2 फैक्ट्रियों में होता है। दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च 2017 से निर्धारित न्यूनतम वेतन कम्पनी नहीं दे रही। बी-5/3 ओखला फेज-2 फैक्ट्री में कम्पनी की हैड ऑफिस भी है। नये ग्रेड के लिये मजदूरों ने कई कदम उठाये हैं। बी-5/3 में 200 के करीब सैम्पलिंग टेलर और फिनिशिंग, प्रैसमैन, पैटर्न मास्टर, धागा कटिंग वरकर। मजदूरों पर नियंत्रण बनाये रखने के लिये सोनुएग्जिम मैनेजमेन्ट ने सैम्पलिंग टेलरों को टारगेट बनाया और उन्हें नौकरी से निकालना शुरू किया। कुछ छोड़ भी गये। दिसम्बर तक सँख्या 40 हो गई। चक्का जाम कर वरकर श्रम विभाग गये। मैनेजमेन्ट ने वहाँ कहा कि किसी वरकर को नहीं निकालेंगे। काम आरम्भ। इधर जनवरी से मैनेजमेन्ट ने फिर निकालने का सिलसिला शुरू किया। विरोध बढा। कम्पनी ने 3 मार्च से एरियर और नये ग्रेड अनुसार हिसाब का झुनझुना बजाया। और, जिन्होंने रिजाइन करने से इनकार किया उनके कार्ड ब्लॉक कर दिये, करीब 60 का गेट रोक दिया। दिल्ली सरकार के श्रम विभाग की मिलीभगत से निकाले वरकरों को दिये चेक में भी सोनुएग्जिम मैनेजमेन्ट ने खेल किया– जनवरी में दिये चेक पर नवम्बर की तारीख डाली। सैम्पलिंग टेलरों ने 1 फरवरी को साँय फिर चक्का जाम किया। मैनेजमेन्ट से कोई बात करने नहीं आया। इधर चक्का जाम किये वरकरों ने 5 फरवरी को फैक्ट्री में वीडियो बना कर व्हाट्सएप के जरिये उसे फैलाया। जिन्हें मिला उनमें से कुछ ने उसे फेसबुक पर भी डाल दिया। शिफ्ट छूटने के बाद पार्क में बैठ कर मजदूरों में चर्चा। वीडियो देख कर पहुँची एक अपरिचित का उन्होंने स्वागत किया। पार्क में कोई लीडर टाइप भाषण नहीं हुये। अनेकों विषयों पर जीवन्त चर्चा आगे कदमों के सन्दर्भ में। अपरिचित ने उनकी बातों को अँग्रेजी में लिख कर फेसबुक के जरिये दुनिया-भर में और प्रसार प्रदान किया।

और बातें यह भी

✶**ओरियन्ट क्राफ्ट** (एफ-8 और बी-16 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्रियों में ढाई-तीन हजार वरकर थे, सब ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे थे। दो-तीन महीने में रिजाइन ले कर सब का हिसाब किया। '' पी एफ से राशि निकालो, फिर भर्ती कर लेंगे।'' वीर सोल्युशन्स ठेकेदार कम्पनी के जरिये नये भर्ती को 8 घण्टे की बजाय साढे दस घण्टे काम के 582 रुपये देते हैं, सुबह साढे नौ से रात 8 बजे तक ड्युटी। साँय 6 बजे छुट्टी कर ली तो हाफ डे लगा देते हैं। और, धागे काटने तथा मोती-सितारे लगाने वाली करीब 300 महिला मजदूरों को आठ घण्टे के मात्र 270 रुपये, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

✶**एशियन हैण्डीक्राफ्ट्स** (310 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम करते 5 वर्ष हो जाते हैं तब मैनेजमेन्ट इस्तीफा लिखवाती है। ग्रेच्युटी की राशि बैंक में भेज देते हैं। फिर वरकर से कहते हैं कि रीज्वाइन करना है तो ग्रेच्युटी की राशि बैंक से निकाल कर वापस दो। यह इधर जनवरी में फिर हुआ है। महंगाई भत्ते का एरियर दे कर भी कम्पनी अधिकारी पैसे वापस ले लेते हैं।

✶**अफलाटैक्स** (12 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 मजदूर फैक्ट्री में काम करते हैं। दस महीने काम करने के बाद अगस्त 2017 में नौकरी छोड़ी। फण्ड निकालने का फार्म नहीं भर रहे। पी एफ से पैसे निकालने के लिये ठेकेदार कम्पनी का सुपरवाइजर 500 रुपये माँग रहा है। पहचान के एक मजदूर से भी 500 रुपये लिये हैं।

✶गत्ते के कार्टन बनाती **बेलपैक** (बी-307 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 30 में से 15 की ई एस आई तथा पी एफ हैं। लेबर इन्सपैक्टर 1 फरवरी को साँय 4 बजे फैक्ट्री आया तब बिना ई एस आई व पी एफ वाले 15 वरकों को फैक्ट्री से बाहर कर दिया – उनकी तनखा मात्र 6500 रुपये है। ऐसा दो बार पहले भी हो चुका है।

✶**गौरव इन्टरनेशनल** (208 उद्योग विहार फेज-1 गुड़गाँव) फैक्ट्री में फर्स्ट फ्लोर इन्चार्ज गाली देता है.......

✶16 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित **फैशन एक्सेसरीज** फैक्ट्री में **ओरियन्ट क्राफ्ट** का काम होता है। हैल्पर के तौर पर 12 दिसम्बर को ठेकेदार कम्पनी ने भर्ती किया तब ज्वाइनिंग लैटर में अन्य बातों के अलावा ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से लिखा था। एक फ्लोर पर 5-6 सिलाई की लाइनों पर 25 हैल्पर थे। साथी वरकरों ने बताया कि ओवर टाइम देंगे सिंगल रेट से जबकि लिखा हुआ दुगुनी दर से है। विश्वास नहीं हुआ और मैंने एक दिन ठेकेदार कम्पनी के मुखिया से सीधा पूछा, ''ओवर टाइम डबल रेट से या सिंगल रेट से मिलेगा?'' एक उँगली दिखा कर वह बोला, ''सिंगल!'' इस पर 31 दिसम्बर को मैंने नौकरी छोड़ दी। हाजरी साढे चौदह दिन बनी और पैसे 12 दिन के दिये। देने की कह कर भी ओवर टाइम के 4 घण्टे के बकाया पैसे नहीं दिये हैं।

✶**गैलेक्सी वोग** (115 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में कम्प्युटर इम्ब्राइड्री विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साढे तीन घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से......

✶**डी एच एल कूरियर** (सी-40 ओखला फेज-2, दिल्ली) कम्पनी में कार्यरत करीब 200 वरकरों को एच आर वाले बोले हैं कि जनवरी की तनखा नये ग्रेड अनुसार देंगे और संग-संग 3 मार्च 2017 से एरियर भी देंगे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।